इस मास में विशेषः साधना दीक्षा

कार्य-साधना सिद्धि-प्रयोग

29 मार्च, भालचन्द्र संकष्टी चतुर्थी

वर्तमान में जब व्यक्ति सुकर्म करने के उपरान्त भी अनेक प्रकार के **कष्ट** और दुःख आदि भोगता है, तब उसका विश्वास ईश्वर और गुरु के प्रति हिलने लगता है। इसके विपरीत दूसरी ओर **छल, कपट** करने वाला व्यक्ति आनन्द और मस्ती के साथ जीवन व्यतीत करता है। इन सबका कारण पूर्व जन्मों में ही छिपा होता है। इस साधना द्वारा न केवल पिछले कई जन्मों को साधक देखने में सफल होता है, अपितु उन कर्म-दोषों का शमन भी इसी साधना द्वारा संयुक्त रूप से हो जाता है। इस साधना के बाद ही साधक को सिद्धि संभव हो पाती है। पूर्व जन्म के **दोषों का शमन** करना अति आवश्यक है।

तीव्र अष्टलक्ष्मी वशीकरण साधना

01 अप्रैल, वित्तीय वर्ष प्रारम्भ

लक्ष्मी को उसकी पूजा या आराधना कर प्राप्त नहीं किया जा सकता। लक्ष्मी तो पुरुषार्थ के द्वारा ही साधक के पास आ सकती है। यदि लक्ष्मी का वशीकरण कर लिया जाये तो वह साधक को सिद्ध होकर उसके भौतिक जीवन को संवारने को बाध्य हो जाती है। यह ऐसा ही सफल प्रयोग है जिसके द्वारा लक्ष्मी को पूर्ण आबद्ध कर घर में स्थायित्व दिया जा सकता है। इस अद्भुत प्रयोग को संपन्न कर जीवन में धन, यश, सम्मान प्राप्त किया जा सकता है। विश्वामित्र प्रणीत यह साधना लक्ष्मी सिद्धि की श्रेष्ठतम साधना है।

तंत्र बाधा शांति ज्वालामालिनी साधनाः

05 अप्रैल, पापमोचनी एकादशी

इतने प्रयासों के बाद भी आज तंत्र के नाम से लोग **भय** खाते हैं, तो उसके पीछे कारण यही है कि लोगों ने इसका उपयोग हित की बजाय निजी स्वार्थ और लालच के लिये अधिक किया है। जिससे एक सीधे सादे व्यक्ति का हंसता-खेलता जीवन **विनाश** के कगार पर आ जाता है। इन सबके पीछे प्रायः उससे **ईर्ष्या** करने वाले किसी शत्रु द्वारा कराये गये घटिया स्तर के टोने टोटके होते हैं। ज्वालामालिनी साधना ऐसे सभी प्रयोगों को समाप्त कर साधक के जीवन में आ रही सभी बाधाओं का नाश कर **सौभाग्य पथ** खोल देती है।

विष्णु वैभव साधना

11 अप्रैल, मत्स्य जयन्ती

भगवान विष्णु सकल जगत को चलाने वाले आदिदेव हैं। उनकी साधना करने से साधक को हर कार्य में पूर्ण सफलता मिलती है, क्योंकि समस्त कार्य मात्र भगवान विष्णु की शक्ति से ही गतिशील हैं। इस साधना को सम्पन्न करने से साधक का व्यक्तित्त्व भी **आकर्षण** से युक्त हो जाता है, जिसके कारण उसे अनेकों लाभ होते हैं, साधक के जीवन में दरिद्रता का तो समापन हो ही जाता है, यदि व्यापार है तो उसमें बरकत होती है। यह साधना जहां पूर्ण भौतिक उन्नति का साधन है, बेरोजगार के लिये व्यवसाय का उपाय है।

साधना एक **साधक** के जीवन का **अभिन्न अंग** है, जो साधक समय-समय पर स्वयं व सामूहिक रूप से साधना सम्पन्न करते हैं, वे सदैव **सद्गुरूदेव** के हृदय में एक **विशिष्ट स्थान** प्राप्त करते हैं। ये **विशिष्ट साधनायें** सम्पन्न करने के लिए **कैलाश सिद्धाश्रम** में सम्पर्क करें।